


सलोकु ॥
जीअ जंत के ठाकुरा
आपे वरतणहार ॥
नानक एको पसरिआ
दूजा कह द्रिसटार ॥22॥





असटपदी ॥

आपि कथै आपि सुननैहारु ॥

आपहि एकु आपि बिसथारु ॥

जा तिसु भावै ता स्रिसटि उपाए ॥

आपनै भाणै लए समाए ॥

तुम ते भिन नही किछु होइ ॥

आपन सूति सभु जगतु परोइ ॥


जा कउ प्रभ जीउ आपि बुझाए ॥

सचु नामु सोई जनु पाए ॥


सो समदरसी तत का बेता ॥


नानक सगल स्रिसटि का जेता ॥१॥







जीअ जंत्र सभ ता कै हाथ ॥
दीन दइआल अनाथ को नाथु ॥
जिसु राखै तिसु कोइ न मारै ॥
सो मूआ जिसु मनहु बिसारै ॥
तिसु तजि अवर कहा को जाइ ॥
सभ सिरि एकु निरंजन राइ ॥
जीअ की जुगति जा कै सभ हाथि ॥
अंतरि बाहरि जानहु साथि ॥
गुन निधान बेअंत अपार ॥
नानक दास सदा बलिहार ॥२॥







पूरन पूरि रहे दइआल ॥
सभ ऊपरि होवत किरपाल ॥
अपने करतब जानै आपि ॥
अंतरजामी रहिओ बिआपि ॥
प्रतिपालै जीअन बहु भाति ॥
जो जो रचिओ सु तिसहि धिआति ॥
जिसु भावै तिसु लए मिलाइ ॥
भगति करहि हरि के गुण गाइ ॥
मन अंतरि बिस्वासु करि मानिआ ॥
करनहारु नानक इकु जानिआ ॥३॥






जनु लागा हरि एकै नाइ ॥
तिस की आस न बिरथी जाइ ॥
सेवक कउ सेवा बनि आई ॥
हुकमु बूझि परम पदु पाई ॥
इस ते ऊपरि नही बीचारु ॥
जा कै मनि बसिआ निरंकारु ॥
बंधन तोरि भए निरवैर ॥
अनदिनु पूजहि गुर के पैर ॥
इह लोक सुखीए परलोक सुहेले ॥
नानक हरि प्रभि आपहि मेले ॥४॥






साधसंगि मिलि करहु अनंद ॥
गुन गावहु प्रभ परमानंद ॥
राम नाम ततु करहु बीचारु ॥
द्रुलभ देह का करहु उधारु ॥
अम्रित बचन हरि के गुन गाउ ॥
प्रान तरन का इहै सुआउ ॥
आठ पहर प्रभ पेखहु नेरा ॥
मितै अगिआनु बिनसै अंधेरा ॥
सुनि उपदेसु हिरदै बसावहु ॥
मन इछे नानक फल पावहु ॥५॥





हलतु पलतु दुइ लेहु सवारि ॥
राम नामु अंतरि उरि धारि ॥
पूरे गुर की पूरी दीखिआ ॥
जिसु मनि बसै तिसु साचु परीखिआ ॥
मनि तनि नामु जपहु लिव लाइ ॥
दूखु दरदु मन ते भउ जाइ ॥
सचु वापारु करहु वापारी ॥
दरगह निबहै खेप तुमारी ॥
एका टेक रखहु मन माहि ॥
नानक बहुरि न आवहि जाहि ॥६॥





तिस ते दूरि कहा को जाइ ॥

उबरै राखनहारु धिआइ ॥

निरभउ जपै सगल भउ मिटै ॥

प्रभ किरपा ते प्राणी छुटै ॥

जिसु प्रभु राखै तिसु नाही दूख ॥

नामु जपत मनि होवत सूख ॥

चिंता जाइ मिटै अहंकारु ॥

तिसु जन कउ कोइ न पहुचनहारु ॥

सिर ऊपरि ठाढा गुरु सूरा ॥

नानक ता के कारज पूरा ॥७॥





मति पूरी अम्रितु जा की द्रिसटि ॥

दरसनु पेखत उधरत स्रिसटि ॥

चरन कमल जा के अनूप ॥

सफल दरसनु सुंदर हरि रूप ॥

धंनु सेवा सेवकु परवानु ॥

अंतरजामी पुरखु प्रधानु ॥

जिसु मनि बसै सु होत निहालु ॥

ता कै निकटि न आवत कालु ॥

अमर भए अमरा पदु पाइआ ॥

साधसंगि नानक हरि धिआइआ ॥८॥२२॥

